



ACHARYA GYANSAGAR

Acharya Gyansagar was born on 2nd June 1891 in the village Ranoli, Rajasthan. His original name was Bhooramal. After his early education in the village school, he graduated as a 'Shastri' from Queen's College, Varanasi. While studying, he took a vow of celibacy and resolved to dedicate his life to propagate the tenets of Jainism and engage in connected literary pursuits.

Acharya Gyansagar followed the path of renunciation throughout his adult life. In due course, he emerged as an outstanding scholar of ancient Jain literature which he interpreted eloquently for the masses. Acharya Gyansagar was elevated as a "Muni" in 1959 and as an "Acharya" in 1969.

Acharya Gyansagar will always be remembered for his outstanding contribution towards revival and enrichment of Jain literature. He wrote nine books in Sanskrit, out of which, four epics are widely read. 'Bhagyodaya',

'Kartavya Path Pradarshan', 'Manav Dharma', 'Vivekodaya' are some of his outstanding literary compositions in Hindi. He also composed the popular Hindi epic poem 'Rishabhavatara' which was inspired by the account of the life of Rishabh Dev, the first Tirthankar, as given in 'Adi Puran'.

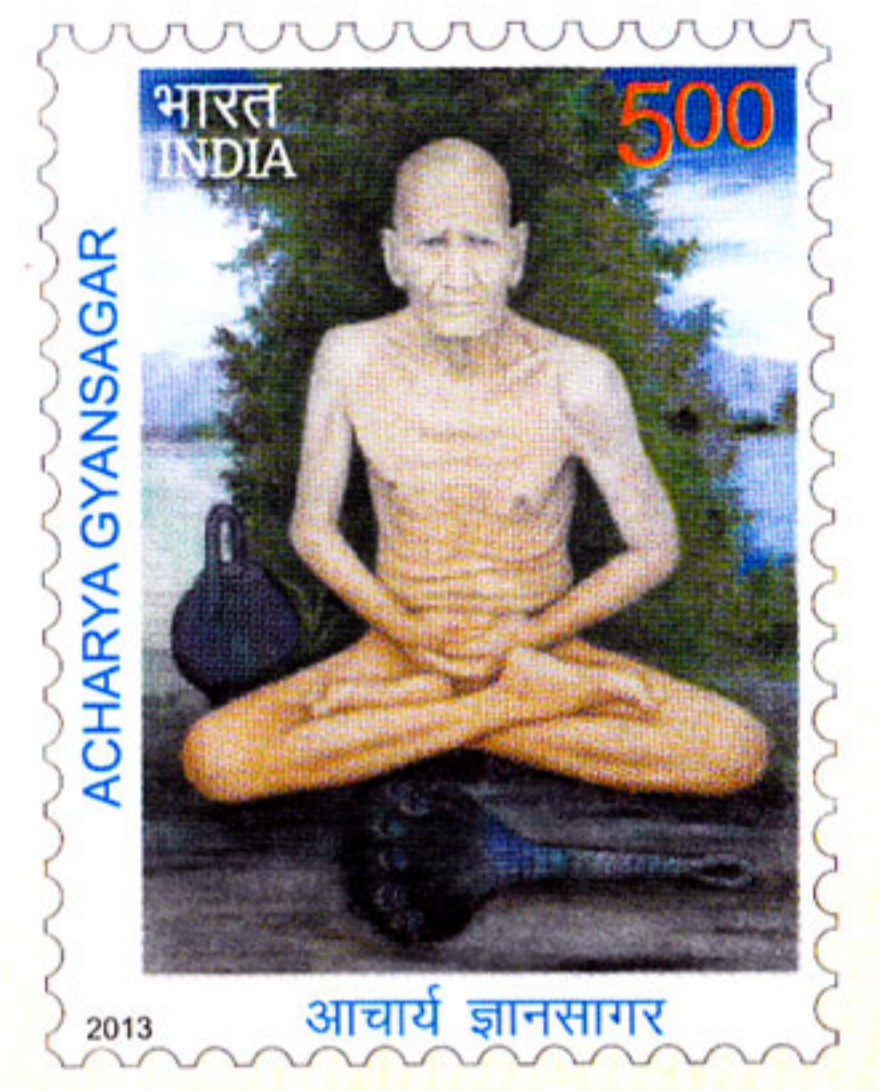
Acharya Gyansagar taught his disciples to limit their desires and be contented in order to achieve happiness. He selflessly practiced what he preached. Acharya Gyansagar breathed his last on 1st June, 1973 at Nasirabad, Rajasthan. His literature and teachings will continue to enlighten the path of his followers.

Department of Posts is happy to commemorate Acharya Gyansagar by issuing a postage stamp.

Credits :

Text : Based on the material provided by the proponent.
Stamp/
Cancellation: Alka Shama
FDC : Bharati Mirchandani

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



आचार्य ज्ञानसागर
ACHARYA GYANSAGAR

विवरणिका BROCHURE

आचार्य ज्ञानसागर

आचार्य ज्ञानसागर का जन्म 2 जून, 1891 को राजस्थान के रानोली गांव में हुआ। उनका असली नाम भूरामल था। गांव के स्कूल में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद, उन्होंने क्वीन्स कॉलेज, वाराणसी से 'शास्त्री' की उपाधि पाई। पढ़ाई के दौरान, उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया और अपना जीवन जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रचार के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया तथा निरंतर साहित्यिक कार्यों में व्यस्त रहे।

आचार्य ज्ञानसागर ने अपनी संपूर्ण युवावस्था में त्याग के पथ का अनुगमन किया। समय के साथ वे प्राचीन जैन साहित्य के सर्वश्रेष्ठ विद्वान के रूप में उभरे और उन्होंने सामान्य जनता के लिए इसकी वाक्पटुता से व्याख्या की। आचार्य ज्ञानसागर को 1959 में "मुनि" तथा 1969 में "आचार्य" का उन्नत स्थान प्रदान किया गया।

आचार्य ज्ञानसागर को जैन साहित्य के पुनरुद्धार एवं इसे समृद्ध बनाने में उनके द्वारा दिए गए श्रेष्ठ योगदान के लिए सदैव याद किया जाएगा। उन्होंने संस्कृत में नौ पुस्तकें लिखीं, जिनमें से चार महाकाव्यों को व्यापक रूप से पढ़ा जाता है। 'भाग्योदय', 'कर्तव्य

पथप्रदर्शन', 'मानवधर्म' एवं 'विवेकोदय' हिंदी में लिखी गई उनकी कुछ श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियां हैं। उन्होंने लोकप्रिय हिंदी कविता 'ऋषभभावतार' की भी रचना की जो 'आदि पुराण' में दिए अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन से प्रेरित थी।

आचार्य ज्ञानसागर ने अपने अनुयायियों को आनंद की प्राप्ति के लिए अपनी इच्छाओं को सीमित रखने एवं संतुष्ट रहने की शिक्षा दी। उन्होंने अपनी कथनी पर निस्वार्थ रूप से आचरण किया। 1 जून, 1973 को राजस्थान के नसीराबाद में आचार्य ज्ञानसागर का निधन हुआ। उनका साहित्य एवं उनकी शिक्षा उनके अनुयायियों का पथ प्रबुद्ध करती रहेगी।

डाक विभाग आचार्य ज्ञानसागर की स्मृति में एक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

मूल पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक-टिकट/
विरूपण : अलका शर्मा

प्रथम दिवस
आवरण : भारती मीरचंदानी



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	:	10 सितम्बर, 2013 10 September, 2013
मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	4.6 लाख* 0.46 Million*
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure reserved with the Department.

*1.5 लाख प्रस्तावक हेतु
*0.15 million for the proponent